छत्तीसगढ़ लोक सेवा आयोग, रायपुर

क्रमांक 1937/93/08/परीक्षा रायपुर दिनांक 31/12/2008

संक्षिप्त विज्ञप्ति

आयुर्वेद चिकित्सा अधिकारी स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग के रिक्त पदों की पूर्ति हेतु आयोग के विज्ञापन क्रमांक 07/2008/चयन/दिनांक 22/05/2008 रोजगार एवं नियोजन में प्रकाशन की तिथि 28/05/2008 एवं संशोधन पत्र क्रमांक 03/2008/चयन/दिनांक 17/07/2008 एवं शुद्वि पत्र क्रमांक 05/2008/चयन /दिनांक 21/08/2008 के अनुक्रम में रिक्त कुल 297 पदों हेतु चयन का आधार लिखित परीक्षा एवं साक्षात्कार होगा। लिखित परीक्षा निम्नांकित परीक्षा योजना एवं पाठयक्रम अनुसार दिनांक **26 अप्रैल 2009 दिन रविवार** को आयोग द्वारा निर्धारित परीक्षा केन्द्रों मे होगी ।

आयुर्वेद चिकित्सा अधिकारी परीक्षा–2008
परीक्षा–योजना

1. परीक्षा में 2 घंटे की अवधि का एक प्रश्न–पत्र आयुर्वेदिक चिकित्सा का होगा।
2. प्रश्न–पत्र कुल 300 अंको का होगा । कुल प्रश्नो की संख्या 100 होगी। प्रत्येक प्रश्न 3 अंक का होगा। सभी प्रश्न वस्तुनिष्ठ प्रकार के होगें। प्रत्येक प्रश्न के चार उत्तर विकल्प होगें, जिनमें से एक सही होगा। प्रश्नों का विभाजन निम्नानुसार होगा :–

1. काय चिकित्सा	20 प्रश्न
2. आत्यायिक चिकित्सा एवं राष्ट्रीय कार्यक्रम	10 प्रश्न
3. शल्य तंत्र एवं शालाक्य तंत्र	10 प्रश्न
4. व्यवहार आयुर्वेद एवं अगद तंत्र	10 प्रश्न
5. प्रसूति तंत्र एवं स्त्री रोग	10 प्रश्न
6. कौमार भृत्य	10 प्रश्न
7. स्वस्थ्यवृत्त	10 प्रश्न
8. प्राकृतिक चिकित्सा एवं योग	10 प्रश्न
9. आयुर्वेद सिद्धान्त	10 प्रश्न

3. प्रश्न पत्र का माध्यम सामान्य रुप से हिन्दी होगा परंतु आवश्यकतानुसार तकनीकी शब्द अंग्रेजी में ब्रेकेट में दिये जावेंगे।
4. लिखित परीक्षा के आधार पर मेरिट सूची से रिक्त पदो के 3 (तीन) गुना अभ्यर्थियों को तथा अंतिम अभ्यर्थी के समान अंक प्राप्त करने वाले अभ्यर्थियों को वर्गवार साक्षात्कार हेतु आहूत किया जाएगा। साक्षात्कार में 30 अंक होंगे।

आयुर्वेद चिकित्सा अधिकारी (स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग)
के चयन हेतु लिखित परीक्षा–2008

पाठ्यक्रम

I. काय चिकित्सा – 20 प्रश्न

1. काय चिकित्सा की परिभाषा, चिकित्सा की परिभाषा, भेद, चतुष्पाद, चिकित्सक के भेद, षडविध उपक्रम सिद्धान्त.
2. पंचकर्म – पंचकर्म में प्रयोज्य कर्म तथा उनका प्रयोजन, परिभाषा तथा विधि का वर्णन । स्नेहन स्वेदन योग्य व्याधियां तथा रोगियों का वर्णन ।
   वमन, विरेचन, शिरोविरेचन, आस्थापन, अनुवासन कर्मों के अयोग, अतियोग, सम्यक् योगों का लक्षण अतियोगजनित उपद्रवों का प्रतिकार । स्नेह प्रयोग में विचारणा की उपादेयता तथा प्रकार का वर्णन । स्नेह की मात्रा, स्नेह के द्रव्यों का तथा स्वेदन–किया में प्रयोज्य द्रव्यों का ज्ञान ।
   वमन, विरेचन, शिरोविरेचन, निरूह, अनुवासन कियाओं में प्रयुक्त होने वाले द्रव्यों तथा यन्त्रों का ज्ञान । संशोधन के योग्य पुरूष के बल–अबल के अनुसार पंचकर्म के उपयोगी औषध तथा द्रव्यों का विचार ।
3. रसायन, – परिभाषा, रसायन का प्रयोजन तथा महत्व । रसायन के प्रकार तथा रसायन सेवन के कुटी प्रवेशिक, वातातपिक भेद । विविध रसायन योग,आचार रसायन, रसायन की मात्रा निर्धारण तथा अवस्था के अनुसार मात्रा भेद.
4. वाजीकरण–, वाजीकरण, परिभाषा प्रयोजन एवं महत्व । विविध वाजीकरण योग एवं उनका गुण, कर्म मात्रा, सेवन प्रयोग विधि, ।
5. निम्न व्याधियों का सामान्य कारण, सम्प्राप्ति, लक्षण, चिन्ह एवं चिकित्सा–ज्वर, अतिसार, ग्रहणी, प्रवाहिका, अर्श, विसूचिका, परिणामशूल, अम्लपित्त, आमवात, वातरक्त, राजयक्ष्मा, रक्तपित्त, पांडु, कामला, अपस्मार, कास, श्वास, कुष्ठ, प्रमेह, मधुमेह, मूत्रकृच्छ, मेदोरोग, अश्मरी आदि । वातव्याधि, उदररोग, उपदंश, उन्माद, अपस्मार, अतत्वाभिनिवेश, गुल्म, कृमिरोग, शीतपित्त, मसूरिका, श्लीपद, आंत्रिकज्वर, श्लेष्मकज्वर, आक्षेपक, विषमज्वर मलेरिया, श्लीपद मसूरिका, रोमान्तिक ज्वरों का प्रतिषेधात्मक तथा चिकित्सा का वर्णन, हृद रोग– हृदयाभिघात, हृच्छूल (हृदयशुल)

निम्नलिखित योगों के रोगाधिकार, मुख्य घटक एवं गुणधर्म–

(1) क्वाथ– षडंगपानीय,

(2) चूर्ण– सुदर्शन, अविपत्तिकर, लवणभास्कर, वालचातुर्भद्र, शतावरी चूर्ण, पुष्यानुग चूर्ण, लवंगचतुःसम, हिंग्वष्टक, पंचसकार, सितोपलादि, तालिसादि, त्रिफला, त्रिकटु, पंचकोल,

(3) गुटिका– शंखवटी, कांचनार गग्गुलु, कैशोर गुग्गुलु, सिंहनाद गुग्गुलु, योगराज गुग्गुलु, संजीवनी वटी, कांकायन वटी, ब्योषादि वटी, चन्द्रप्रभा वटी, चित्रकादि वटी, लवंगादि वटी,एलादि वटी,रसोन वटी,आरोग्यवर्धनी वटी.

(4) अवलेह– वासावलेह, च्यवनप्राशावलेह,चित्रकहरीतकी अवलेह,व्याघ्रीहरीतकी .

(5) आसवारिष्ट– द्राक्षारिष्ट, अमयारिष्ट, अर्जुनारिष्ट, अमृतारिष्ट, दशमूलारिष्ट, कुटजारिष्ट, कुमार्यासव, लोहासव, लोध्रासव, कनकासव, अशोकारिष्ट,चंदनासव,

(6) तेल– नारायण तेल, मरिच्यादि तेल, विषगर्भ तेल.पंचगुण तेल,

(7) घृत– फलघृत, त्रिफलाघृत. ब्राम्ही घृत,

(8) रस– मकरध्वज, रस सिंदूर, आरोग्यवर्धिनी, मृत्युंजय रस, आनन्द भैरव रस, हिंगुलेश्वर रस, बसन्तकुसुमाकर रस, विषमज्वरांतक लौह, सर्वज्वरहर लौह, सूतशेखर रस, वातकुलान्तक रस,वृहतवात–चिंतामणी रस, जलोदरारि रस, रामबाणरस, पुनर्नवामण्डूर, सप्तामृतलौह, नवायसलौह, कुमारकल्याणरस, गर्भपाल रस, प्रतापलंकेश्वररस,लक्ष्मीविलासरस,रसमाणिक्य,गंधकरसायन,

(9) भस्म एवं पिष्टी– शंखभस्म, कर्पदिका भस्म, गोदन्ती भस्म, प्रवालपिष्टी, जहरमोहरा पिष्टी, अकीक पिष्टी, कहरवा पिष्टी, लोह भस्म, स्वर्णमाक्षिकभस्म, शुद्धस्फटिका, स्वर्जिका क्षार, यवक्षार. अमृतासत्व, पंचामृतपर्पटी, श्वेतपर्पटी, बोलपर्पटी,

II. आत्यायिक चिकित्सा एवं राष्ट्रीय कार्यक्रम – 10 प्रश्न

आत्यायिक चिकित्सा– आत्यायिक चिकित्सा (आकस्मिक दुर्घटना या अन्य कारणजन्य रोग चिकित्सा) परिभाषा, प्रकार तथा सामान्य चिकित्सा सिद्धान्त । जैसे– जल, विद्युत, अपघात, दग्ध, तीव्र रक्तस्राव, तीव्र उदरशूल, वृक्कशूल, तीव्रश्वास, काठिन्य, मूत्रावरोध, आंत्रावरोध, हृच्छूल मूर्च्छा, तीव्र उदर कला शोथ, तीव्र आन्त्रशोथ, तीव्र ज्वर, औषध प्रतिक्रया, विषाक्तता आदि के आत्ययिक अवस्थाओं का विवेचन तथा प्रतिकार ।

अमृतजल आदि का सूचीभरण, रक्तदान ।

स्वास्थ्य संगठन की रचना, परिवार कल्याण कार्यक्रम, परिवार कल्याण कार्यक्रम की विविध पद्धतियां,

राष्ट्रीय कार्यकम –मलेरिया, नेत्रान्ध्य, राजयक्ष्मा, कुष्ठनिवारण आदि राष्ट्रीय कार्यकम का स्वरूप ।

मातृ–शिशुकल्याण कार्यकम – मातृ– शिशुकल्याण कार्यकम का उद्देश्य, महत्व, बालको में टीकाकरण की व्यवस्था, भारत वर्ष में मातृ शिशु कल्याण के विभिन्न कार्यकम ।

विश्व–स्वास्थ्य–संगठन आलमाआटा घोषणा पत्र ।

III. शल्य एंव शालाक्य तंत्र – 10 प्रश्न

निम्न व्याधियों के सामान्य कारण, लक्षण एवम् शस्त्र चिकित्सा परिकर्तिका अर्श, भगंदर, अश्मरी, उदररोग, विद्रधि, ग्रंथी, अर्बुद, अपची, वृद्धि, श्लीपद, निरूद्ध प्रकश, कुनख, गलगण्ड, गण्डमाला ।

व्रणशोथ विद्रधि की निदान एवं चिकित्सा ।

व्रण, दुष्टव्रण, नाड़ीव्रण की निदान एवं चिकित्सा ।

सद्योव्रण (आगन्तुजव्रण) की चिकित्सा सीवन पट्टबंधन प्रकार आदि ।

दग्धव्रण, रक्तस्राव निदान चिकित्सा ।

क्षारकर्म अग्निकर्म, जलौका अवचारण तथा रक्तमोक्षण चिकित्सा तथा संधान कर्म ।

अबूर्द, ग्रंथि, अस्थि भग्न एवं संधिमोक्ष निदान एवं चिर्कित्सा ।

स्तनविद्रधि, यकृतविद्रधि, की निदान चिकित्सा ।

मूत्रकृच्छ वृषणवृद्धि, मूत्रवृद्धि और आंत्रवृद्धि अण्डकोष विकार सामान्य निदान एवं चिकित्सा ।

नेत्र शारीर नेत्र किया शारीर एवं नेत्र परिक्षण ।

संधिगत रोग की संख्या, पूयालस उपनाह, पर्वणी अलजी आदि का निदान एवं चिकित्सा ।

वर्त्मगत रोग की संख्या उत्संगिनी पोथकी का निदान एवं चिकित्सा ।

शुक्लगत रोग की संख्या अर्म, पिष्टक, का निदान एवं चिकित्सा ।

कृष्णगत रोग की संख्या सव्रणशुक्ल, अव्रणशुक्ल आदि का निदान एवं चिकित्सा ।

सर्वगतरोग की संख्या अभिष्यन्द, अधिमन्थ का निदान एवं चिकित्सा ।

दृष्टिगत रोग की संख्या कांच,तिमिर, लिंगनाश, (केटरेक्ट) आदि रोगों का निदान एवं चिकित्सा ।

शिरोगतरोग,– सूर्यावर्त,अर्द्धविभेदक,शिरोरोग,इन्द्रलुप्त,खालित्य,पालित्य,अरूषिका, इनके लक्षण तथा चिकित्सा।

कर्णरोग– कर्णशूल,कर्णनाद,कर्णक्ष्वेड,कर्णविद्रधि,कर्णस्त्राव,कर्णपाक,कर्णगूथ,बाधिर्य इनके लक्षण तथा चिकित्सा।

नासारोग– नासा रोगों की संख्या, प्रतिश्याय,पीनस,अपीनस,क्षवथु,नासार्श,नासानाह, आदि रोगों के लक्षण तथा चिकित्सा।

दन्तरोग– दन्तशर्करा,कृमिदन्त,दालन,दन्तहर्ष, आदि रोगों के लक्षण तथा चिकित्सा।

दन्तमूलगतरोग–शीताद,दन्तवेष्ट,शौषिर,अधिमांस, आदि रोगों के लक्षण तथा चिकित्सा।

जिव्हागतरोग– जिव्हागत रोगों की संख्या, जिव्हाकण्टक,उपजिव्हिका इनके लक्षण तथा चिकित्सा।

तालुरोग– संख्या, गलशुण्डिका,तुण्डिकेरी,तालुपाक, आदि के लक्षण तथा चिकित्सा।

कण्ठगतरोग– संख्या, कण्ठशालूक, के लक्षण तथा चिकित्सा।

मुखपाक– भेद, लक्षण तथा चिकित्सा।

IV. व्यवहार आयुर्वेद एवं अगद तंत्र – 10 प्रश्न

विष की परिभाषा, उत्पत्ति, विष क्रिया, विष का प्रकार,

मद्यविष – मद्यविष के दोष तथा गुण। मद की विभिन्न अवस्थाएं,मदात्यय का लक्षण तथा चिकित्सा ।

जंगम विष – सर्पविष, विष के अनुसार सर्पों के भेद, सर्पदंश के लक्षण तथा चिकित्सा । वृश्चिकविष, लूताविष, मूषकविषों के लक्षण तथा चिकित्सा । अलर्कविष लक्षण, साध्यासाध्यता तथा चिकित्सा ।

उपविषवर्णन – लक्षण तथा चिकित्सा । कुपीलु, भल्लातक, अहिफेन, धतूर, भांग अर्क एवं जयपाल ।

खनिज विष – पारद, नाग, वंग, गिरिपाषाण तथा ताम्र आदि का प्रभाव, लक्षण चिकित्सा ।

भारतदेश में सामान्यतः प्रयोग में आने वाले विषों का परिचय, वर्गीकरण तथा उनके सेवन से उत्पन्न लक्षण, निदान तथा चिकित्सा ।

न्यायालय तथा तत्संबंधी विवेचन आरक्षण में (पुलिस) परीक्षण, शपथ, चिकित्सक के साक्षी । चिकित्सक के प्रमाण पत्र, मृत्युकाल के समय लिखित अथवा मौखिक साक्षी, उस विषय के अभिप्राय तथा उसके नियम ।

व्याभिचार – अप्राकृतिक कर्म, गर्भपात, भ्रूणहत्या, कौमार्य का व्यवहारायुर्वेदीय परिज्ञान ।

चिकित्सक का कर्तव्य, आचार–नियम, व्यसायिक अधिकार तथा गोपनीयता ।

V. प्रसूति तंत्र–स्त्री रोग – 10 प्रश्न

रजोविज्ञान – आर्तव, रजोत्पत्ति, रज का प्रमाण–मात्रा स्वरूप,कार्य । रजोनिवृत्ति, स्तन, आर्तव, स्तन्य (दूध) – इन सबका आपसी संबंध विवेचन ।

गर्भविज्ञान – गर्भावक्रान्ति, गर्भव्याख्या, शुक्रवर्णन गर्भसंभव सामग्री, गर्भ में लिंग (स्त्री–पुरूष) निर्णायक लक्षण और परीक्षण, गर्भ की आकृति, गर्भ का मासानुमासिक वृद्धि, अपरा का निर्माण, अपरा की विकृति, गर्भोपक्रम, नाभिनाड़ी गर्भप्रकृति तथा विकृति ।

गर्भिणी विज्ञान– सद्योगृहीत गर्भा के लक्षण, पुंसवनविधि, गर्भिणी निदान एवं लक्षण ।

गर्भ व्यापद – गर्भस्राव, गर्भपात, उपविष्टक, नागोदर, लीनगर्भ, मूढगर्भ, अकाल प्रसव, कालातीत प्रसव, पाण्डु, गर्भजन्यविषमता, मृतगर्भ ।

गर्भिणी व्यवस्था – स्वास्थ्य परीक्षा–रक्तचाप, नाडीभार, रक्त, मल, मूत्र, योनिस्राव । गर्भिणी के स्वास्थ्य का निर्देश, शिक्षा व्यवस्था, आहार, विहार, दिनचर्या ।

प्रसव विज्ञान – परिभाषा, अवधि, हेतु, आसन्न–प्रसवा का लक्षण, प्रसवपत्रिका, उपस्थित प्रसव का लक्षण, प्रसवकाल, की अवस्थ में प्रबन्ध ।

प्रसव व्यापद – गर्भसंग, अपरासंग, प्रसवोत्तर रक्तस्राव,

सूतिका विज्ञान – सूतिका काल, सूतिका कालान्तर्गत परिवर्तन व्यवस्था, सूतिका का आहार, सूतिका रोग, संख्या, हेतु, लक्षण, साध्यासाध्यता तथा चिकित्सा ।

स्तन्य (दूध) – स्तन्यदुष्टि, अल्पप्रवृत्ति, प्रचुरप्रवृत्ति, इसका कारण तथा चिकित्सा ।

स्त्री रोग –

रजोक्षय रजोदुष्टि, कष्टार्तव, रक्तप्रदर, योनिव्यापद, योनिभ्रंश, बन्ध्यत्व का हेतु, भेद, निदान, लक्षण तथा चिकित्सा ।

स्तनकीलक, स्तनविद्रधि निदान, लक्षण तथा चिकित्सा ।

VI. कौमारभृत्य – 10 प्रश्न

सद्योजात– जातमात्र–नवजात–बालक की परिचर्या, स्तन्य के अभाव में पथ्य, चिकित्सा व्यवस्था ।

धात्री परीक्षा– बालक का मानसिक शारीरिक वृद्धि तथा विकास ।

बालरोग परीक्षा विधि– वय भेद के अनुसार औषधि मात्रा का निर्धारण ।

संघात बल प्रवृत्त– कामला

आदि बल प्रवृत्त– राजयक्ष्मा

दैवबल प्रवृत्त– जलशीर्षक

प्रसवोत्तर व्याधियां – नाभिरोग, आक्षेपक, मुखपाक, गुदपाक, मलावरोध, छर्दि, अतिसार, प्राणवहस्त्रोतस् की व्याधि ।

क्षीरान्नाद–दन्तोद्भेद कालीन व्याधियां– कृमि, ज्वर, अतिसार, मृद्भक्षण जन्य, पाण्डु, पारिगर्भिक, फक्क, शोष, शैशवीय पक्षाघात, शैया मूत्र, अपस्मार,कृमिदन्त ।

व्याधिक्षमत्व – व्याधिक्षमत्व विकृति से उत्पन्न व्याधियां तथा उनका सामान्य परिचय, प्राथमिक व्याधिक्षमत्व हीनता, द्वितीय व्याधिक्षमत्व हीनता ।

VII. स्वस्थवृत्त – 10 प्रश्न

व्यक्तिगत स्वास्थ्य– स्वस्थवृत्त का प्रयोजन, स्वस्थ का लक्षण, दिनचर्या, रात्रिचर्या, रितुचर्या, त्रय उपस्तम्भ, सद्वृत्त, धारणीय अधारणीय वेग, उपवास, निन्दित, अनिन्दित पुरूष, प्रज्ञापराध शरीर का शोधन तथा रक्षात्मक कार्य अहितकर कार्य ।

आहार विधि– आहार विधि विशेष आयतन वर्णन, पथ्यापथ्य आहार–भोजन पाचनकाल, आहार का दुष्परिणाम तथा उसके रोग संतर्पण अपतर्पण जन्य व्याधि ।

आहार का प्रमाण तथा पोषण – प्रोभूजन–कार्बोज, वसा–खनिज लवण–जीवनीय तत्वों की योनियां (उद्गमसाधन), कार्य,अभावजन्य व्याध्यिां, षड्रस भोजन का महत्व, देश के अनुसार पोषण, मानपरीक्षा, पोषण का सामाजिक परिणाम, पोषण विषयक राष्ट्रीय कार्यक्रम ।

निद्रा

ब्रम्हचर्य

विहार– दिनचर्या, रात्रिचर्या, ऋतुचर्या, वेगसंधारणगत दोषों का वर्णन, संगति का स्वास्थ्य पर प्रभाव, सद्वृत्त, आचार, रसायन, मिथ्या विहार से रोगों का उद्भव ।

जल– जलशुद्धि के प्रकार, भौतिक तथा रासायनिक जल–शोधन, यान्त्रिक जल–शोधन की अनेक विधियां जल परीक्षणादि ।

अपद्रव्य– नगर एवं ग्रामीण अपद्रव्यों (कूड़ा करकट) के निवारण की व्यवस्था ।

शव विनाश – अग्निदाह, भूमि में गाड़ना, विद्युतदाह ।

संक्रामक रोग– जनपदोंद्ध्वंस–संक्रामक रोग की परिभाषा, विज्ञप्ति, विसंक्रमित करना, विसंक्रमण की प्राकृतिक–रासायनिक एवं भौतिक विधियां, विषमज्वर, मसूरिका, विसूचिका, वातज्वर, व्याधिक्षमत्व प्रकार, संसर्जन तथा कुप्रसंग से उत्पन्न रोग, जैसे– फिरंग, उपदंश पूयमेह आदि का प्रतिकार ।

VIII. प्राकृतिक चिकित्सा एवं योग – 10 प्रश्न

स्वास्थ्य रक्षा में योग का महत्व

यम तथा नियम

आसन की उपयोगिता तथा स्वास्थ्य पर प्रभाव ।

निम्न प्रमुख आसनों का ज्ञान – स्वस्तिकासन, गोमुखासन, कूर्मासन, कुक्कुटासन, उत्तानकूर्मासन, धनुरासन, मत्स्येन्द्रासन, पश्चिमोत्तासन, मयूरासन, शवासन, सिद्धासन, पद्मासन, सिंहासन, सर्वांगासन, शीर्षासन, पवनमुक्तासन, भुजंगासन, वज्रासन, मत्स्यासन, चक्रासन ।

प्राणायाम के समय अवर–प्रवर–मध्य क्रम का लक्षण ।

प्राणायाम का स्वेद कार्य ।

षट्कर्म "धौति" आदि छः क्रियाएं ।

योग के आठ अंग तथा उनका परिचय ।

नैष्ठिकी चिकित्सा ।

निसर्गोपचार का प्रयोजन तथा महत्व ।

जल का महत्व

पाद प्रक्षालन, वमन, धौति, वस्ति, स्नान तथा पाद–हस्त

वाष्प स्नान

मिट्टी चिकित्सा

आतपस्नान

मर्दन का भेद, गुण

उपवास का चिकित्सा में महत्व ।

IX. आयुर्वेद सिद्धान्त – 10 प्रश्न

आयु : परिभाषा, स्वस्थ परिभाषा, पंचमहाभूतों का दोषों से सम्बन्ध षढविध किया काल का ज्ञान वातपित्त एवं कफ के भेद, गुण तथा कर्म ।

धातु – भेद, कर्म, निरूवित । पोषण कम सिद्धान्त । रस, रक्त मांस, भेद, अस्थि मज्जा, शुक्र– इनकी निरूक्ति उत्पत्ति एवं सामान्य गुणकर्म वर्णन :रस से शुक्र तथा आर्तव की उत्पत्ति , ओज की उत्पत्ति तथा गुण । उपधातुओं की उत्पत्ति प्रकार तथा गुण ।

मल – भेद, महत्व, कर्म ।

दोषों के प्रकोप के कारण, वृद्धि क्षय के कारण एवं लक्षण ।

दोषों का कोष्ठ से शाखा आदि में गमन, शाखा आदि से कोष्ठ में गमन ।

दोष–दूष्य का आश्रय–आश्रयीभाव ।

दोषों के चय–प्रकोप आदि के हेतु ।

क्रियाकाल, दोषों के संचय के लक्षण, व्यापन्न ऋतुओं में दोष प्रकोप एवं लक्षण । प्रसर का विशेष लक्षण एवं स्थानसंश्रय का वर्णन ।

सप्त पदार्थ, द्रव्य–रस–गुण–वीर्य–विपाक–प्रभाव–कर्म–इनके सामान्य परिचय ।

निदानपंचक का महत्व – हेतु(कारण) पूर्वरूप, रूप–रूप का महत्व, उपशय, सम्प्राप्ति का परिचय एवं महत्व, नाडी–मूत्र आदि अष्टविध परीक्षा तथा षड्विध परीक्षा ।

सही/–
सचिव
छ.ग. लोक सेवा आयोग
रायपुर